वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 248

राजगृही तीर्थ परिचय एवं पूजा

संकलनकर्त्री

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वितीय वर्षायोग के अन्तर्गत आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव-2004'' एवं पूज्य माताजी के 71वें जन्मदिवस के अवसर पर प्रकाशित

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	शरदपूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रति	28 अक्टूबर 2004	15.00

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

साहित्य समाज का दर्पण होता है, उसी के द्वारा देश, समाज एवं प्राचीन तीर्थों के वैभव का परिज्ञान होता है। पूर्व में मनुष्यों की बुद्धि अतितीक्ष्ण होने से वे एक बार सुनने मात्र से ही उसे ग्रहण कर लेते थे, तब साहित्य लेखन की परम्परा नहीं थी किन्तु जब हमारे पूर्वाचार्यों ने मानवों की स्मृति को क्षीण होते देखा, तब केवलज्ञानियों की वाणी को शास्त्रों में संजोना-लिखना प्रारंभ कर दिया।

लेखन परम्परा में सर्वप्रथम आचार्य श्री गुणधरस्वामी ने कषायप्राभृत ग्रंथ एवं पुष्पदंत-भूतबली आचार्यों ने षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ रचा, उसके पश्चात् तो अनेक आचार्यों ने अनेक बहुमूल्य ग्रंथ लिखे जो कि मंदिरों एवं शास्त्र-भण्डारों में आज भी उपलब्ध हैं, जिनके बल पर ही जैनधर्म का अस्तित्व टिका है।

वर्तमान में बीसवीं शताब्दी में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्यसृजन के इतिहास में अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है और धर्म से उन्मुख लोगों को धर्म की ओर मोड़ने का तथा आगम का ज्ञान करवाने का जो सद्प्रयास किया है, उस हेतु जैन समाज उनका चिरऋणी रहेगा। आज वर्तमान का समसामयिक विषय हमारे तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि एवं कल्याणकभूमियों पर लगे प्रश्नचिन्ह का है, उस श्रृंखला में भी जैन समाज को सही दिशा दिखाने हेतु पूज्य माताजी सतत प्रयासरत हैं और इस क्रम में उन्होंने अपनी सुयोग्य शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को प्रेरणा प्रदान कर तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों को पूजा के माध्यम से बताने का प्रयास किया है। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी भी लेखन जगत में एक उदीयमान सूर्य हैं, जो पूज्य माताजी के पदचिन्हों पर चलकर अपनी जीवन्त लेखनी से जनमानस में धर्मरूपी गंगा का प्रवाह कर रही हैं, उसी धर्मगंगा का एक रूप यह "राजगृही तीर्थक्षेत्र पूजा" है। आप सब इस पुस्तक के माध्यम से भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली एवं भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर महान पुण्य का संचय करें, यही मंगल कामना है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। आज समाज में फैली भ्रामक विचारधाराओं से जनमानस तीर्थंकर भगवन्तों के जीवनवृत्त के विषय में दिग्भ्रमित हो गया है और उससे संबंधित विषयों को पूछे जाने पर उचित उत्तर नहीं मिल पाता है। यह काल का अभिशाप ही है कि भारत की जिस धरती पर तीर्थंकर महापुरुषों के जन्म लेते ही नरकों में भी कुछ क्षण के लिए शांति हो गई थी तथा पृथ्वी रत्नमयी हो गई थी, आज उनकी जन्मभूमियों को विस्मृत व उपेक्षित किया जा रहा है, यह देखकर अत्यन्त दु:ख होता है।

पद्मपुराण के अनुसार जब-जब धरती पर अनाचार व अत्याचार के बढ़ जाने पर कोई न कोई महापुरुष अवतरित होकर पृथ्वी को पुन: सुखमय व शांतिपूर्ण बना देते हैं, उसी प्रकार वर्तमान में हमें द्वादशांगरूप वाणी को प्रदान कर जैनधर्म का परिज्ञान करवाने वाले तीर्थंकरों की जन्मभूमियों पर जब कतिपय दिशाहीन लोगों द्वारा प्रश्नचिन्ह लगाया जा रहा है, तब वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास हेतु महत्वपूर्ण दिशानिर्देश प्रदान कर उन तीर्थों का विकास कार्य प्रारंभ किया गया। साथ ही उनके जीवन को सरल भाषा में पूजा के माध्यम से सभी को बताने हेतु उन्होंने अपनी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को प्रेरणा प्रदान कर तीर्थंकर जन्मभूमियों की पूजन रचना करवाई, उनमें से ही यह एक 'राजगृही पूजा' है। मगध देश स्थित राजगृही तीर्थ जहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथ के जन्म से पावन है, वहीं अनेक पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाएँ इस भूमि से जुड़ी हैं, जिनका विस्तृत वर्णन इस पुस्तक के माध्यम से प्राप्त होगा।

आप सब परमपूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की सशक्त लेखनी एवं सुरुचिपूर्ण शैली में लिखित इस पुस्तक में रचित अनेक पूजाओं के माध्यम से राजगृही के महत्त्व को जानकर उस पवित्र माटी की चरण रज लेकर स्वयं को धन्य करें और जन-जन को जन्मभूमियों से परिचित करवाएं, यही इस पुस्तक की सार्थकता है।

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत-जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी

राष्ट्रगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का

-ःसंक्षिप्त-परिचयः-

प्रस्तुति-आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान —टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि —आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१(सन् १९३४)

गृहस्थ का नाम —कु. मैना

माता-पिता —श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग— ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा —चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी क्षेत्र (राज.) में

आर्यिका दीक्षा —वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी के करकमलों से।

कृतित्व — ◆ अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्रव्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका।

◆ हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तीनमूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐमंदिर आदि के निर्माण की प्रेरिका।

◆ समवसरण श्रीविहार रथ का सम्पूर्ण भारत में २२ मार्च १९९८ से प्रवर्तन।

◆ १९८१, १९८२, १९८५, १९८७, १९९२,१९९३, १९९५, १९९८ में जैनधर्म संबंधी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों की प्रेरिका।

◆ १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

◆ ४ फरवरी २००० को भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महा महोत्सव की सम्प्रेरिका।

◆ "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली" प्रयाग तीर्थ के निर्माण एवं नूतन तीर्थ पर ४ से ८ फरवरी २००१ तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक की प्रेरणास्रोत।

◆ ई.सन् २००१ में भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर २६००मंत्रों से समन्वित "विश्वशांति महावीर विधान" का लेखन एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) तीर्थ विकास की प्रेरणा।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की संकलनकर्त्री

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का

-ःसंक्षिप्त परिचयः-

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

जन्म — १८ मई सन् १९५८, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या

जन्मस्थान — टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्म नाम — कु. माधुरी जैन

माता-पिता — श्रीमती मोहिनी जैन एवं श्री छोटेलाल जैन

लौकिक शिक्षा — हाईस्कूल

धार्मिक अध्ययन — शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि

आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत— सन् १९७१, अजमेर (राज.) में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से

दो प्रतिमा के व्रत — सन् १९८२, दिल्ली में

सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग — मार्च सन् १९८७ हस्तिनापुर में

आर्यिका दीक्षा — १३ अगस्त, सन् १९८९ रविवार, श्रावण शुक्ला ग्यारस को हस्तिनापुर में पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों से

कार्यकलाप — १८ वर्ष तक पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छत्रछाया में गुरु वैयावृत्ति एवं स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, तपश्चरण एवं धर्मप्रवचन, अध्ययन आदि के साथ ही साथ सतत साहित्य लेखन ।

वर्तमान में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित षट्खंडागम ग्रंथ की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक ग्राम, नगर एवं तीर्थक्षेत्रों पर विहार करते हुए अपने हित-मित-प्रिय वचनामृत से जनकल्याण में निरत और साधना की उच्चतर सीढ़ियों पर सतत आरोहण।

तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि

राजगृही तीर्थ का परिचय

लेखक-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

भगवान ऋषभदेव की तीर्थंकर परम्परा में २०वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ हुए हैं, जिन्होंने आज से ग्यारह लाख वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त की राजगृही नगरी में जन्म लिया। राजगृही नगरी के महाराजा सुमित्र की महारानी सोमा ने एक दिन रात्रि के पिछले प्रहर में ऐरावत हाथी, उत्तुंग बैल आदि सुन्दर-सुन्दर सोलह सपने देखे। प्रातःकाल पतिदेव से उनका फल पूछने पर "आप तीर्थंकर पुत्र को जन्म देंगी" ऐसा जानकर वे बहुत हर्षित हुईं, श्रावण कृ. २ को इन्द्रों ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ का गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया तथा भगवान के गर्भ में आने के छह महीने पहले से ही सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता सोमा के आंगन में रत्नों की वर्षा प्रतिदिन करना प्रारंभ कर दिया।

वैडूर्यमणि के समान मनोहर वर्ण वाले, हरिवंशशिरोमणि भगवान मुनिसुव्रतनाथ ने वैशाख कृष्णा द्वादशी को जन्म लिया। देवों ने भगवान् का सुमेरु पर्वत पर अभिषेक करके "**मुनिसुव्रत**" नामकरण किया। इनकी आयु तीस हजार वर्ष एवं ऊँचाई बीस धनुष (८० हाथ) की थी। इनका चिन्ह कछुआ माना गया है।

कुमार काल के सात हजार पाँच सौ वर्ष बीत जाने पर भगवान का राज्याभिषेक हुआ। राज्यावस्था में प्रभु के पन्द्रह हजार वर्ष बीत जाने पर किसी दिन गरजती हुई घनघटा के समय उनके मुख्य हाथी ने वन का स्मरण कर खाना-पीना बंद कर दिया। उस समय महाराज मुनिसुव्रतनाथ अपने अवधिज्ञान से उस हाथी के मन की सारी बातें जान गए। वे कुतूहल से भरे मनुष्यों के सामने हाथी का पूर्वभव कहने लगे कि यह हाथी पूर्वभव में तालपुर नगर का नरपति—राजा था। अपने उच्चकुल के अभिमान से इसने अशुभलेश्याओं से सहित, मिथ्याज्ञानी, पात्र-अपात्र की परीक्षा से रहित किमिच्छक दान दिया था, उसके फलस्वरूप यह हाथी हुआ है। इस समय भी

यह अपने अज्ञान आदि का स्मरण न करता हुआ वन का स्मरण कर रहा है। इतना सुनते ही उस हाथी को अपने पूर्वभव का स्मरण हो गया और उसने प्रभु से देशसंयम ग्रहण कर लिया।

इसी निमित्त से प्रभु को वैराग्य हो गया और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त भगवान अपराजिता नामक पालकी पर बैठकर नीलवन में पहुँचे। वहाँ चम्पक वन के नीचे वैशाख कृष्णा दशमी के दिन श्रवणनक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ दीक्षित हो गए। उनकी प्रथम पारणा का लाभ राजगृह के (राजगृही के एक उपनगर के) राजा वृषभसेन को प्राप्त हुआ था।

छद्मस्थ अवस्था के १ वर्ष व्यतीत होने पर वैशाख कृष्णा नवमी के दिन श्रवण नक्षत्र में प्रभु को केवलज्ञान प्रगट हो गया। समवसरण में दिव्य धर्मोपदेश करते हुए भगवान की आयु जब १ माह की शेष रही, तब वे सम्मेदशिखर पर जा पहुँचे। वहाँ फाल्गुन कृष्णा द्वादशी के दिन रात्रि के पिछले भाग में अघातिया कर्मों का नाशकर सिद्ध परमात्मा हो गये। भगवान मुनिसुव्रतनाथ वर्तमान वीर नि.सं. २५३० से ११,५६,५३० वर्ष पहले मोक्ष गये हैं। इन मुनिसुव्रतनाथ भगवान को मेरा नमस्कार होवे।

विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी —आज से २६०३ वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला से कुण्डलपुर (नालंदा) के नंद्यावर्त महल में चैत्र शु. १३ को जन्म लिया था। ३० वर्ष की आयु में मगशिर कृ. १० को उन्होंने दीक्षा धारण की, पुनः वैशाख शु.१० के दिन भगवान को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। केवलज्ञान होने के पश्चात् भगवान का समवसरण बन गया था किन्तु उन की दिव्यध्वनि नहीं खिर रही थी। जब प्रभु का श्रीविहार होता, तब समवसरण विघटित हो जाता था एवं प्रभु का श्रीविहार आकाश में अधर होता था। देवगण भगवान के चरणकमलों के नीचे-नीचे स्वर्णमयी सुगंधित दिव्य कमलों की रचना करते रहते थे पुनः जहाँ भगवान रुकते, अर्धनिमिषमात्र में कुबेर आकाश में अधर ही समवसरण बना देता था। छ्यासठ दिन तक मौन से विहार करते हुए श्री वर्धमान जिनेन्द्र जगत्प्रसिद्ध राजगृही नगरी आए।

वहाँ जिस प्रकार सूर्य उदयाचल पर आरूढ़ होता है उसी प्रकार लोगों को प्रतिबद्ध करने के लिए समवसरण लक्ष्मी के स्वामी भगवान विपुलाचल पर्वत पर आरूढ़ हुए।

जब इन्द्रराज ने देखा— भगवान को केवलज्ञान होकर ६६ दिन व्यतीत हो गए, फिर भी उन की दिव्यध्वनि नहीं खिर रही है क्या कारण है? चिन्तन कर यह पाया कि गणधर का अभाव होने से ही दिव्यध्वनि नहीं खिरी है। तब सौधर्मेंद्र इन्द्रभूति ब्राह्मण को इस योग्य जानकर उस अभिमानी को युक्ति से समवसरण में ले आया, वहाँ मानस्तम्भ को देखते ही गौतम का मान गलित हो गया और उन्हें सम्यक्त्व प्रगट हो गया। समवसरण के सारे वैभव को देखते हुए महान् आश्चर्य को प्राप्त उन्होंने भगवान महावीर स्वामी का दर्शन किया और भक्ति में गद्‌गद होकर ''जयति भगवान् ....इत्यादि स्तुति करने लगे। स्तुति करके विरक्तमना होकर उन इन्द्रभूति ने प्रभु के चरण सानिध्य में जैनेश्वरी दीक्षा ले ली, तत्क्षण ही उन्हें मति-श्रुत ज्ञान के साथ ही अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो गया। वे गणधरपद को प्राप्त हो गए, तभी भगवान की दिव्यध्वनि खिरी थी।

गौतम स्वामी का परिचय —आर्यखण्ड में बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर के निकट ब्राह्मण नामक एक नगर था। वहाँ शांडिल्य नाम के ब्राह्मण रहते थे। इनके तीन पुत्र थे जो कि सर्ववेदवेदांग के ज्ञाता थे। इन तीनों के इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति नाम प्रसिद्ध थे। इन्द्रभूति-गौतम ब्राह्मण किसी ब्रह्मशाला में पाँच सौ शिष्यों के गुरू थे। गौतम गोत्र होने के कारण ये गौतम स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। भगवान महावीर को केवलज्ञान होने के पश्चात् ६६ दिनों के बाद इन्हीं गौतम स्वामी के निमित्त से उनकी दिव्यध्वनि खिरी थी।

तत्पश्चात् जब कार्तिक कृष्णा अमावस को भगवान महावीर निर्वाण को प्राप्त हुए, उसी दिन शाम को गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। उत्तरपुराण में लिखा है—

''जिस दिन भगवान् महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त होगा, उसी दिन मैं केवलज्ञान प्राप्त करूँगा।'' श्री गौतम स्वामी द्वारा रचित चैत्यभक्ति, वीरभक्ति,

दैवसिक प्रतिक्रमण, पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्रावक प्रतिक्रमण ये पाँच महामूल्यवान रचनाएं दिगम्बर जैन सम्प्रदाय में आज भी उपलब्ध हैं और प्रसिद्ध हैं। उन गौतम स्वामी को मेरा बार-बार नमन।

समवसरण की महिमा — आज से लगभग २५७० वर्ष पूर्व जब भगवान महावीर स्वामी का समवसरण विपुलाचल पर्वत पर आया था। लाखों-लाख नर-नारियों की भीड़ के साथ, एक मेंढक भी भगवान की भक्ति में गद्‌गद होकर मुख में कमल की पांखुड़ी दबाकर दर्शन को चल पड़ा। राजा श्रेणिक भी अपने हाथी पर बैठकर पूरे वैभव के साथ भगवान का दर्शन करने जा रहे थे। रास्ते में वह मेंढक राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे दबकर मर गया और उसी क्षण भगवान की भक्ति के भाव से मरकर स्वर्ग में देव हो गया वहाँ अपने अवधिज्ञान से अपना पूर्वभव जानकर भगवान के समवसरण में आ गया और भक्ति के वशीभूत होकर नृत्य करने लगा। राजा श्रेणिक ने समवसरण में पहुँचकर उसे देखा तो उन्होंने प्रश्न किया— भगवन्! यह देव इतना प्रसन्न होकर नृत्य क्यों कर रहा है? इसके मुकुट में मेंढक का चिन्ह क्यों बना हुआ है? तब भगवान् की दिव्यध्वनि को गौतम गणधर ने अपने शब्दों में प्रस्तुत किया— हे राजन्! यह देव कुछ देर पहले मेंढक की पर्याय में समवसरण में आ रहा था तुम्हारे हाथी के पैर के नीचे दबकर मरने से स्वर्ग में देव हुआ और वहाँ से पूर्वभव को जानकर यहाँ आया है तथा प्रसन्नमना होकर नृत्य कर रहा है। सुनकर सभी लोग भगवान की भक्ति की महिमा से परिचित हुए।

राजा श्रेणिक —मगधदेश की राजधानी राजगृही में राजा श्रेणिक अपनी धर्म परायणा रानी चेलना के साथ निवास करते थे। रानी चेलना वैशाली के राजा चेटक की पुत्री तथा भगवान महावीर की माता त्रिशला की छोटी बहन थीं। राजा श्रेणिक बौद्ध धर्मानुयायी थे जबकि रानी चेलना की जैन धर्म में पूर्ण आस्था थी। राजा श्रेणिक रानी चेलना को बौद्धधर्मी बनाना चाहते थे तथा रानी चेलना राजा श्रेणिक को जैनधर्मानुयायी बनाने का प्रयास करती रहती थीं।

एक बार राजा श्रेणिक शिकार के लिए गए हुए थे वहाँ उन्होंने यशोधर मुनिराज को ध्यान में लीन देखा तब धर्मविद्वेष से गुस्से में आकर अपने

शिकारी कुत्तों को मुनि पर छोड़ दिया। कुत्ते बड़ी निर्दयता से मुनि को मारने के लिए झपटे परन्तु मुनिराज की तपश्चर्या के प्रभाव से वे उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सके बल्कि उनकी प्रदक्षिणा देकर उनके चरणों के समीप खड़े हो गए। यह देख श्रेणिक ने और भी क्रोधित होकर मुनिराज पर बाण चलाना शुरू कर दिया परन्तु यह कैसा आश्चर्य! वे बाण उन्हें कुछ भी क्षति न पहुँचाकर ऐसे जान पड़ते थे मानो किसी ने उन पर पुष्पवर्षा की है! पुनः श्रेणिक ने उनके गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया। सर्प डालते ही उन्होंने सातवें नरक की आयु का बंध कर लिया।

वापस आकर उन्होंने एक दिन बाद रानी चेलना से सारी बात बताई। सुनकर वह बहुत दुःखी हुई और राजा श्रेणिक को बहुत कुछ समझा-बुझाकर मुनिराज के समीप लाईं। मुनिराज पूर्ववत् ध्यान में लीन थे, सर्प के कारण चीटियाँ उनके शरीर पर चढ़कर उन्हें कष्ट पहुँचा रही थीं। रानी ने बुद्धिपूर्वक सर्प को हटाकर चीटियों को भी हटाया पुनः बार-बार नमोस्तु करके मुनिराज के सम्मुख बैठ गईं। ध्यान समाप्त करने पर मुनिराज ने आंखें खोलीं। दोनों ने मुनिराज को नमस्कार किया, तब मुनिराज ने "सद्धर्मवृद्धिरस्तु" कहकर दोनों को समान आशीर्वाद दिया। यह देखकर राजा श्रेणिक को बहुत पश्चात्ताप हुआ और उन्होंने बार-बार मुनिराज से क्षमायाचना करते हुए सम्यग्दर्शन ग्रहण कर लिया। तदनन्तर किसी समय जब भगवान महावीर का समवसरण राजगृही नगरी में आया, तब राजा श्रेणिक ने उनके समवसरण में जाकर खूब भक्ति की तथा उन्होंने क्रमशः भगवान के समवसरण में साठ हजार प्रश्न किए। उन्होंने उन उत्कृष्ट परिणामों से अपनी सातवें नरक की आयु को घटा-घटाकर एक समय प्रथम नरक की मध्यम आयु में परिणत कर लिया। इतना ही नहीं समवसरण में भगवान के चरण सानिध्य में उन्होंने सोलहकारण भावनाओं का चिन्तन करके तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया। आने वाली उत्सर्पिणी में इसी अयोध्या नगरी में भविष्यकाल के २४ तीर्थंकरों में से वे "**महापद्म**" नाम के प्रथम तीर्थंकर होंगे।

उन भविष्यत्कालीन महापद्म तीर्थंकर को मेरा बारम्बार नमन।

बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ का जीवन दर्शन

-गणिनी ज्ञानमती

जन्मभूमि — राजगृही (जि. नालंदा) बिहार

पिता	— महाराजा सुमित्र	*माता*	— महारानी सोमा
वर्ण	— क्षत्रिय	*गोत्र*	— काश्यप
वंश	— हरिवंश (यदुवंश)	*देहवर्ण*	— वैडूर्यमणि सदृश
चिन्ह	— कछुआ	*आयु*	— तीस हजार वर्ष
अवगाहना	— अस्सी हाथ	*गर्भ*	— श्रावण कृ. २
जन्म	— वैशाख कृ. १२	*तप*	— वैशाख कृ. १०

दीक्षा वन एवं वृक्ष — नीलवन एवं चंपक वृक्ष

प्रथम आहार — राजगृह के राजा वृषभसेन द्वारा (खीर)

केवलज्ञान वन एवं वृक्ष — नीलवन एवं चंपक वृक्ष

केवलज्ञान	— वैशाख कृ. ९	*मोक्ष*	— फाल्गुन कृ. १२

मोक्षस्थल — सम्मेदशिखर पर्वत

समवसरण में चतुर्विध संघ

गणधर	— श्री मल्लि आदि १८	*मुनि*	— तीस हजार
गणिनी	— आर्यिका पुष्पदंता	*आर्यिका*	— पचास हजार
श्रावक	— एक लाख	*श्राविका*	— तीन लाख
जिनशासन यक्ष	— वरूण देव	*यक्षी*	— बहुरूपिणी देवी

भगवान मुनिसुव्रतनाथ वर्तमान वीर नि. सं. २५३० से ११,८६,५३० वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

अर्घ्य —बसंततिलकाछंद

नीरादि अर्घ्य भर थाल चढ़ाए देऊँ।
कैवल्य ज्ञानमति नाथ! मुझे दिला दो।।
वंदूं सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
सम्पूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशें।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जीवन दर्शन

-गणिनी ज्ञानमती

जन्मभूमि — कुंडलपुरी (जि. नालंदा) बिहार
पिता — महाराजा सिद्धार्थ *माता* — महारानी प्रियकारिणी (त्रिशला)
वर्ण — क्षत्रिय *गोत्र* — काश्यप
वंश — नाथवंश *देहवर्ण* — तप्त स्वर्ण सदृश
चिन्ह — सिंह *आयु* — बहत्तर वर्ष
अवगाहना — सात हाथ (अरत्नि) *गर्भ* — आषाढ़ शु. ६
जन्म — चैत्र शु. १३ *तप* — मगसिर कृ. १०
दीक्षा वन एवं वृक्ष — षण्डवन (मनोहरवन) एवं साल वृक्ष
प्रथम आहार — कूल ग्राम के राजा वकुल द्वारा (खीर)
विशेष आहार — कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा (खीर)
केवलज्ञान वन एवं वृक्ष —षण्डवन (मनोहरवन) एवं साल वृक्ष
केवलज्ञान — वैशाख शु. १० (ऋजुकूला नदी के तट पर)
वीरशासन जयंती — (प्रथम दिव्यध्वनि दिवस) श्रावण कृ. १
मोक्षकल्याणक — कार्तिक कृ. अमावस्या, *मोक्षस्थल* — पावापुरी

समवसरण में चतुर्विध संघ

गणधर — श्री इन्द्रभूति आदि ११ *मुनि* — चौदह हजार
गणिनी — आर्यिका चंदना *आर्यिका* — छत्तीस हजार
श्रावक — एक लाख *श्राविका* — तीन लाख
जिनशासन यक्ष — मातंग देव (गुह्यकदेव) *यक्षी* —सिद्धायिनी देवी

२६०३ वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ। भगवान महावीर स्वामी वर्तमान वीर नि. सं. से २५२९ वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

अर्घ्य

त्रिशला नंदन, शत शत वंदन, शत शत वन्दन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू वर, दीप धूप फल लाए हैं।
निज ''ज्ञानमती'' कैवल्य हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
हे वीर प्रभो! हम अर्घ्य चढ़ाकर, नमन करें तव चरणों में। त्रिशला......

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय-दर्पण

पूजा	पृ.
१. राजगृही तीर्थ पूजा	१५
२. मुनिसुव्रत जिन पूजा	२२
३. महावीर जिन पूजा	२७
४. गौतम गणधर पूजा	३३
५. सुधर्माचार्य गणधर पूजा	३८
६. महासती चंदना आर्यिका पूजा	४३
७. भजन	४८
८. भजन	४९
९. भजन	५०
१०. राजगृही तीर्थ की आरती	५१
११. मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती	५३
१२. महावीर स्वामी की आरती	५४
१३. गणधरवलय मंत्र	५५
१४. चैत्यभक्ति	५७
१५. वीरभक्ति	६२

राजगृही तीर्थ पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-फूलों सा........

मुनिसुव्रत जन्मस्थली, राजगृही धाम है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।टेक.।।

जिस भूमि को ग्यारह लाख वर्षों, पहले ही यह सौभाग्य मिला।
सोमावती माता के महल में, पूरब दिशा का सूरज खिला।।
सूर्य चमकता है, तीर्थ महकता है, राजगृही के शुभ नाम से।
तीरथ की कीरत अमर, होती है प्रभु नाम से।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।१।।

सबसे प्रथम पूजन में करूँ, आह्वानन व स्थापना तीर्थ की।
सन्निधिकरण से अर्चन करूँ, शुद्धातम की आराधना हेतु ही।
मन में बसा लूँ मैं, प्रभु को बिठा लूँ मैं, हो जाएगा पावन मन मेरा।
तीरथ अरु तीर्थंकरों की, पूजन का फल मान्य है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

तर्ज-जैनधर्म के हीरे मोती........

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु की, जन्मभूमि है राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।टेक.।।
क्षीरोदधि का जल लेकर, जलधारा कर लूँ भक्ति से।
जन्मजरामृत्यू का क्षय हो, प्रगटे आतम शक्ति है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्य मही।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर, जिनवर पद में चर्चन कर लूँ।
भवआतप हो जाय नष्ट, इस हेतु तीर्थ अर्चन कर लूँ।।
इसी भावना को लेकर, मैं मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंजों में ही, गजमोती की कल्पना करूँ।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदि पुष्प में ही, मैं दिव्य पुष्प कल्पना करूँ।
कामबाण के नाश हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के भोजन की, कल्पना करूँ नैवेद्य बना।
पूजन में वह अर्पण कर, क्षुधरोग विनाशन हो अपना।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ही रत्नों के, दीपक की कल्पना किया।
मोह नाश हेतू आरति कर, तीरथ की अर्चना किया।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप जलाई अग्नी में।
कर्म भस्म करने हेतू, तीरथ की पूजा करनी है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे सुस्वादू फल मैंने, जाने कितने खाये हैं।
शिवफल हेतू अब पूजन में, उन्हें चढ़ाने आये हैं।।

इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन् ! आठों द्रव्यों को, मिला अर्घ्य अर्पण कर लूँ।
पद अनर्घ्य के हेतु ''चन्दनामती'' तीर्थ अर्चन कर लूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**गंग नदी की धार का, प्रासुक जल भर लाय।**
शांतिधारा मैं करूँ, निज पर को सुखदाय।।

शान्तये शान्तिधारा।

राजगृही उद्यान के, विविध पुष्प मंगवाय।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जीवन हो सुखदाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

कल्याणक अर्घ्य (रोला छन्द)

श्रावण कृष्णा दूज, राजगृही नगरी में।
सोमावति के गर्भ, आये त्रिभुवनपति हैं।।
मैं भी अर्घ्य चढ़ाय, उस नगरी को पूजूँ।
पाऊँ पद सुखदाय, भवबंधन से छूटूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणकपवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि वैशाख सुमास, की द्वादशि तिथि आई।
मुनिसुव्रत भगवान, जन्मे खुशियाँ छाईं।।

जन्मकल्याण पवित्र, उस नगरी को अर्चन।
कर हो पावन चित्त, राजगृही का वंदन।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणकपवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि वैशाख, को दीक्षा जहाँ धारी।
जातिस्मृति से नाथ, ने सम्पत्ति बिसारी।।
नीलबाग से प्रसिद्ध, था राजगृहि उपवन।
पूजूँ उसको नित्य, खिल जावे मन उपवन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमी वदि वैशाख, चंपक तरुतल तिष्ठे।
केवलज्ञान प्रकाश, पाया मुनिसुव्रत ने।।
राजगृही उद्यान, समवसरण से पावन।
पूजूँ जिनवर थान, हो मेरा मन पावन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।
ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं राजगृहीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

शेरछन्द

हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।टेक.।।

यूँ तो जगत में जन्मते हैं प्राणि अनन्ते।
मरते हैं प्रतिक्षण भी यहाँ प्राणि अनन्ते।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१।।

एकेन्द्रि से पंचेन्द्रि तक जो जीव आतमा।
उन सबमें छिपा शक्ति से भगवान आतमा।। हे नाथ.।।२।।

भगवान आतमा प्रगट पुरुषार्थ से होता।
पुरुषार्थ बिना मात्र जग में खाना है गोता।। हे नाथ.।।३।।

तीर्थंकरों का सिद्धपद निश्चित है यद्यपी।
फिर भी तपस्या करके वे पाते हैं शिवगती।।हे नाथ.।।४।।

मैंने भी मनुष जन्म जो पाया अमोल है।
वह मोक्षमार्ग के लिए सचमुच ही मूल है।।हे नाथ.।।५।।

इस काल में निर्वाणपद की प्राप्ति नहीं है।
पर जन्म सार्थ करने की युक्ति यहीं है।।हे नाथ.।।६।।

पुरुषार्थ के द्वारा प्रथम तो कार्य शुभ करें।
जीवन में सदाचार से सारे अशुभ टलें।।हे नाथ.।।७।।

प्रभु जन्मभूमि अर्चन का अर्थ है यही।
आत्मा में रागद्वेष अल्प होवें शीघ्र ही।।हे नाथ.।।८।।

इस राजगृही में जनम मुनिसुव्रतेश का।
प्रभु वीर की खिरी यहीं पे प्रथम देशना।।हे नाथ.।।९।।

है पंच पहाड़ी में एक विपुलाचल गिरी।
जिस पर बनी रचना है प्रभू गंधकुटी की।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१०।।

गणधर सुधर्मा ने यहीं से सिद्धपद लिया।
कुछ मुनि के सिद्धपद से सिद्धक्षेत्र यह हुआ।।हे नाथ.।।११।।

जिननाथ मुनिसुव्रतेश की बड़ी प्रतिमा।
श्री ज्ञानमती मात प्रेरणा की है महिमा।।हे नाथ.।।१२।।

जयमाल में यह अर्घ्य थाल मैं सजा लाया।
अर्पण करूँ अनर्घ्यपद की प्राप्त हो छाया।। हे नाथ.।।१३।।

भगवान श्री जिनेन्द्र से विनती यही मेरी।
मिट जावे ''चन्दनामती'' संसार की फेरी।।हे नाथ.।।१४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

श्री मुनिसुव्रत जिन पूजा

-गणिनी ज्ञानमती

अथ स्थापना-नरेंद्र छंद

श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकर के, चरण कमल शिर नाऊँ।
व्रत संयम गुण शील प्राप्त हों, यही भावना भाऊँ।।
मुनिगण महाव्रतों को पाकर, मुक्तिरमा को परणें।
हम भी आह्वानन कर पूजें, पाप नशें इक क्षण में।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-वसंततिलका छंद

सरयू नदी जल भरा कनकाभ झारी।
धारा करूँ त्रय जिनेश्वर पाद में मैं।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं......।

कर्पूर संग घिस चंदन गंध लाया।
पादारविंद प्रभु के चर्चूं अभी मैं।।वंदूँ०।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं......।

मोती समान धवलाक्षत पुंज धारूँ।
मेरा अखंड पद नाथ! मुझे दिला दो।।वंदूँ०।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं......।

बेला गुलाब सुरभी करते दशों दिक्।
पादारविंद प्रभु के अर्पण करूँ मैं।।वंदूँ०।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं......।

फेनी सुहाल गुझिया बरफी बनाके।
हे नाथ! अर्पण करूँ क्षुध रोग नाशे।।
वंदूँ सदैव मुनिसुव्रत को रुची से।
संपूर्ण चारित मिले भव दुःख नाशे।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.........।

कर्पूर ज्योति जलती हरती अंधेरा।
हे नाथ! आरति करूँ निज ज्ञान चमके।।वंदूँ०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

खेऊँ सुगंध वर धूप सु अग्नि में मैं।
संपूर्ण कर्म झट भस्म बने न दुःख दें।।वंदूँ.।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.......।

केला अनार वर द्राक्ष बदाम लेके।
अर्पूं तुम्हें सब मनोरथ पूर्ण कीजे।।वंदूँ०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं......।

नीरादि अर्घ्य भर थाल चढ़ाय देऊँ।
मेरा अनर्घ्य पद नाथ! मुझे दिला दो।।वंदूँ०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम राज्य, त्रिभुवन में भी शांति हो।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
मिले सर्व सुखकार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

रोलाछंद

पिता सुमित्र नरेश, राजगृही के शास्ता।
सोमावति के गर्भ, बसें जगत शिर नाता।।
श्रावण कृष्णा दूज, इन्द्र जजें पितु माँ को।
जजूँ गर्भ कल्याण, मिले आत्मनिधि मुझको।।१।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां श्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं.......।

जन्म लिया प्रभु आप, वदि वैशाख दुवादश।
इन्द्र लिया शिशु गोद, पहुँचे पांडुशिला तक।।
एक हजार सुआठ, कलशों से नहलाया।
जजत जन्म कल्याण, पुनि पुनि जन्म नशाया।।२।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं......।

जातिस्मरण निमित्त, वदि वैशाख सुदशमी।
अपराजिता पालक्कि, नीलबाग में प्रभुजी।।
सिद्धं नमः उचार, स्वयं ग्रही प्रभु दीक्षा।
नमूँ नमूँ शत बार, मिले महाव्रत दीक्षा।।३।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं....।

चंपक तरु तल नाथ, वदि वैशाख नवमि के।
केवलज्ञान विकास, समवसरण में तिष्ठे।।
श्रीविहार में चरण तले, प्रभु स्वर्ण कमल थे।
नमूँ नमूँ नतमाथ, ज्ञान कल्याणक रुचि से।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं......।

श्री सम्मेद सुशैल, फाल्गुन वदि बारस में।
किया मृत्यु को दूर, मुक्तिरमा ली क्षण में।।

नमूँ मोक्ष कल्याण, कर्म कलंक नशाऊँ।
मुनिसुव्रत भगवान्, चरणों शीश झुकाऊँ।।५।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।
जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय नमः।

जयमाला

सोरठा

श्री मुनिसुव्रत देव, अखिल अमंगल को हरें।
नित्य करूँ मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें।।१।।

सखी छंद

जय जय जिनदेव हमारे, जय जय भविजन बहुतारे।
जय समवसरण के देवा, शत इन्द्र करें तुम सेवा।।२।।
जय मल्लि प्रमुख गणधरजी, सब अठरह गणधर गुरु जी।
जय तीस हजार मुनीश्वर, रत्नत्रय भूषित ऋषिवर।।३।।
जय गणिनी सुपुष्पदंता, पच्चास सहस संयतिका।
श्रावक इक लाख वहाँ पर, त्रय लाख श्राविका शुभ कर।।४।।
तनु अस्सी हाथ कहायो, प्रभु तीस सहस वर्षायू।
कच्छप है चिह्न प्रभू का, तनु नीलवर्ण सुंदर था।।५।।
मुनिवृंद तुम्हें चित धारें, भविवृंद सुयश विस्तारें।
सुरनर किन्नर गुण गावें, किन्नरियाँ बीन बजावें।।६।।
भक्तीवश नृत्य करे हैं, गुण गाकर पाप हरे हैं।
विद्याधरगण बहु आवें, दर्शन कर पुण्य कमावें।।७।।
भव भव के त्रास मिटावें, यम का अस्तित्व हटावें।
जो जिनगुण में मन पागें, तिन देख मोहरिपु भागें।।८।।

जो प्रभु की पूज रचावें, इस जग में पूजा पावें।
जो प्रभु का ध्यान धरे हैं, उनका सब ध्यान करे हैं।।९।।
जो करते भक्ति तुम्हारी, वे भव भव में सुखियारी।
इस हेतु प्रभो! तुम पासे, मन के उद्गार निकासे।।१०।।
जब तक मुझ मुक्ति न होवे, तब तक सम्यक्त्व न खोवे।
तब तक जिनगुण उच्चारूँ, तब तक मैं संयम धारूँ।।११।।
तब तक हो श्रेष्ठ समाधी, नाशे जन्मादिक व्याधी।
तब तक रत्नत्रय पाऊँ, तब तक निज ध्यान लगाऊँ।।१२।।
तब तक तुम ही मुझ स्वामी, भव भव में हो निष्कामी।
ये भाव हमारे पूरो, मुझ मोह शत्रु को चूरो।।१३।।

घत्ता

जय जय तीर्थंकर, विश्व हितंकर, जय जय जिनवर वृष चक्री।
जय ''ज्ञानमती'' धर, शिव लक्ष्मीवर, भविजन पावें सिद्धश्री।।१४।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.......।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

सोरठा

मुनिसुव्रत जिनराज, मुनिगण व्रतिगण से नमित।
मिले स्वात्म साम्राज्य, भक्तिभाव से पूजते।।१।।

।।इत्याशीर्वादः।।

महावीर जिन पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

(तर्ज-तुमसे लागी लगन......)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
आवो आवो यहाँ नाथ! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

(तर्ज-चंदन सा बदन.......)

शंभु छंद

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।त्रि.।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।

हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।त्रि.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं......।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।त्रि.।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.......।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।त्रि.।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं......।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.......।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।त्रि.।।७।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं......।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अतिसरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।८।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.......।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
हे वीर प्रभो! हम अर्घ्य चढ़ा, कर नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

उपेंद्रवज्रा छंद

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले हैं भवदधि किनारा।।१०।।
शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

गीता छंद

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथि, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।१।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं....।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।२।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं...।

मगसिर वदी दशमी तिथि, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।३।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं....।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथि, गौतम मुनी गणधर बनें।
तव दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।४।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।

निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।५।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपति साकार।।१।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा......)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।२।।

जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।३।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।४।।

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानी, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएं, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।५।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।६।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।७।।

घत्ता

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीताछंद

महावीर की निर्वाण बेला, में भविक शुचि भाव से।
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर,पूजते अति चाव से।।
वे भव्य नर सुर के अतुल, संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि ''ज्ञानमति'', निर्वाण लक्ष्मीपति बने।।१।।

।।इत्याशीर्वादः।।

गौतम गणधर पूजा

-गणिनी ज्ञानमती माताजी

गीता छंद

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब कार्य में मंगल भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक–नन्दीश्वर पूजन चाल

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं......।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं......।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं........।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरण युगपूज, वांछित फल पाऊँ।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।८।।
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं......।
जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं......।
गुरू चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।१०।।
शांतये शांतिधारा।
वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर मैं।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः।
जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने नमः (१०८ या ९ बार)।

जयमाला

दोहा

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।१।।

रोला छंद

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।

जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।२।।
इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।३।।
छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।४।।
मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।५।।
त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।
चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।६।।
उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।७।।
निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांगमय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।८।।

वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।९।।
इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।१०।।
गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवें।
धन धान्यादि पूर, मोक्ष संपदा देवें।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।११।।

दोहा

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान् ।।१२।।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

दोहा

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः।

राजगृही से मोक्ष प्राप्त

श्री सुधर्माचार्य गणधर की पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (शंभु छंद)

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू के ग्यारह गणधर शिष्य कहे।
उनमें चतुर्थ गणधर सुधर्मस्वामी की हम सब शरण लहें।।
उन श्री सुधर्म गणधर स्वामी की पूजन का आह्वानन है।
सन्निधीकरण करके मन मंदिर में कर लूँ स्थापन है।।१।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्य गणधरदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्य गणधरदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्य गणधरदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

शीतल झरनों से प्रकृति का, सौन्दर्य सुहाना लगता है।
वह जल प्रभु चरणों में चढ़कर, शाश्वत शीतल रह सकता है।।
गणधर सुधर्म स्वामी के चरणों में जल से प्रक्षालन है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वन्दन है।।१।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कश्मीर की धरती पर सुरम्य, केशर उद्यान महकते हैं।
उसको घिस प्रभु पद चर्चन से, उद्यान सफल वे बनते हैं।।
गणधर सुधर्म स्वामी के चरणों में चंदन का चर्चन है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।२।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सागर मणिमुक्ता से संयुक्त, रत्नाकर सार्थक नाम धरे।
उसके मोती अक्षत बनकर, प्रभु पद चढ़ सार्थक नाम करें।।

गणधर सुधर्म स्वामी के पद में, चढ़े धवल शुभ तंदुल हैं।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।३।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक बेला आदिक पुष्पों को, जग में सुमन कहा जाता।
वह सुमन सुमन से जिन पद में, अर्पण कर सुमन सुपद पाता।।
गणधर सुधर्म स्वामी के पद में, थाल सुमन का अर्पण है।
प्रभुवीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।४।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कल्पवृक्ष भोजन देकर, निज नाम को सार्थक करते हैं।
वे प्रभु की समवसरण भूमी में, दर्शक का मन हरते हैं।।
गणधर सुधर्म स्वामी पद में, नैवेद्य थाल यह अर्पण है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।५।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के रंग बिरंगे झालर, झूमर में जग झूम रहा।
नहिं एक दीप भी जला ज्ञान का, इसीलिए जग घूम रहा।।
गणधर सुधर्म स्वामी सम्मुख, घृतदीप किया प्रज्वालन है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।६।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों में फैली धूप सुरभि से, तन में सुख अनुभूति हुई।
प्रभु सम्मुख धूप जलाते ही, आतमसुख की अनुभूति हुई।।
गणधर सुधर्मस्वामी सम्मुख, मैं करूँ धूप प्रज्वालन है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।७।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भारत की पावन वसुन्धरा, कितने फल पैदा करती है।
प्रभु के चरणों में चढ़ा उन्हें, गौरव का अनुभव करती है।।

गणधर सुधर्मस्वामी के पद में, फल का थाल समर्पण है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वंदन है।।८।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप फल थाल भरा।
''चन्दनामती'' गणधर पद में, यह अष्टद्रव्य का थाल धरा।।
गणधर सुधर्म स्वामी के चरणों में शुभ अर्घ्य समर्पण है।
प्रभु वीर समवसृति के चतुर्थ, गणधर को मेरा वन्दन है।।९।।
ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भक्तिगंग का नीर ले, गणधर पद त्रयधार।
भवजलधी से तीर दे, गुरुपद शांतीधार।।१०।।

शान्तये शांतिधारा।

श्रद्धा के लेकर सुमन, गणधर पद विकिरन्त।
महक उठे मानव जनम, क्रम से हो भव अन्त।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

(शेरछंद)

जैवन्त हों गणधर सुधर्मस्वामि गुरुवरम् ।
जैवन्त हो महावीर प्रभू का समवसरणम् ।।
जैवन्त हों बारहगणों के प्रभु गणीश्वरम् ।
जैवन्त हों गणनायकं चतुर्थ गणधरं।।१।।

महावीर प्रभु विराजे थे विपुलाचल ऊपर।
धनपति रचित समवसरण में शोभते अधर।।
श्री इन्द्रभूति गौतम जब पहुँचे वहाँ पर।
छ्यासठ दिवस के बाद दिव्यध्वनि खिरी प्रथम।।२।।

सबसे प्रथम गणधर का पद उन्हीं को मिला था।
ग्यारह गणाधीशों से समवसरण खिला था।।
उनमें ही चौथे गणधर का पद मिला जिन्हें।
उन श्री सुधर्मस्वामी के पदकमल नमें।।३।।

महावीर प्रभु की दिव्य देशना को झेलते।
फिर प्राणियों को मुक्तिपथ की ओर ले चलते।।
महावीर के संग तीस वर्ष तक भ्रमण किया।
उनके समवसरण को आपने नमन किया।।४।।

गौतम गणी के बाद ज्ञान आपको मिला।
क्रमशः परम्परा से श्रुत का ज्ञान है चला।।
उस द्वादशांग का ही अंश आज तक मिला।
अनुयोग चाररूप ज्ञान कमल है खिला।।५।।

जिस दिन प्रभू महावीर का निर्वाण हुआ था।
गौतम को उसी शाम केवलज्ञान हुआ था।।
गौतम का पुनः जिस दिन निर्वाण हो गया।
गणधर सुधर्म को भी केवलज्ञान हो गया।।६।।

गौतम गणेश बारह वर्ष केवली रहे।
इतने ही वर्ष तक सुधर्म केवली रहे।।
पश्चात् जम्बूस्वामी को कैवल्यपद मिला।
अड़तिस बरस के बाद उन्हें मोक्षपद मिला।।७।।

पावापुरी जलमंदिर है वीर मुक्तिथल।
अतएव वीर के वहाँ बने चरण कमल।।
उन के उभय तरफ हैं दो गणधर के श्रीचरण।
गौतम सुधर्मस्वामी के उन चरणों में नमन।।८।।

जो धर्म की साकार प्रतिकृती उन्हें नमन।
जो मुक्तिमार्ग की अनुकृती उन्हें नमन।।
जयमाल में पूर्णार्घ्य थाल को करूँ अर्पण।
यह ''चन्दनामती'' का लो स्वीकार समर्पण।।९।।

दोहा

गणाधीश गणधर नमूँ, चरण सुधर्मास्वामि।
पूजन कर पूजित बनूँ, पा जाऊँ शिवधाम।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री सुधर्माचार्यगणधरदेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभु छंद

जो भविजन गणधर सुधर्मस्वामी के चरणों को जजते।
वे सम्यक् आत्म धर्म को पाकर शिवपथ के राही बनते।।
क्रम से श्रावक पद एवं मुनिपद को वे धारण करके।
वही ''चन्दनामती'' एक दिन समवसरण गणधर बनते।।१।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान महावीर के समवसरण की प्रमुखगणिनी

महासती चंदना आर्यिका माताजी की पूजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना-शंभुछंद

तीर्थंकरप्रभु श्री महावीर का, जिनशासन महिमाशाली।
उनके युग की गणिनी माता, चन्दना सती का यश भारी।।
उन सती चन्दना माता की, पूजा का थाल सजाया है।
उनकी गुण सुरभी पाने का, शुभ भाव हृदय में आया है।।

दोहा

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण विधान।
करूँ चन्दना मात के, श्री चरणों में आन।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मातः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक-शंभु छंद

यमुना नदि का जल भर करके, माता के चरण पखारें हम।
उन सम सहिष्णुता मिल जावे, बस यही भावना भाएं हम।।
श्रीवीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवन्दन है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचंदनाआर्यिका मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी शीतलता के समक्ष, चंदन भी सचमुच शरमाया।
उन मात चरण के चर्चन को, चन्दन खुद है चढ़ने आया।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दनी सती के, चरणों में अभिवंदन है।।२।।

ॐ ह्रीं महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिकामात्रे संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस अक्षयसुख के लिए चन्दना, ने दीक्षा स्वीकार लिया।
उसकी ही प्राप्ती हेतु सभी ने, अक्षत पुंज चढ़ाय दिया।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाली का उपवन जिनके, चरणों को सदा चूमता है।
इक नन्हा फूल उसी माता के, पद में आज घूमता है।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख माता को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शील की रक्षा के खातिर, जिसने भोजन भी त्याग किया।
उन चरणों में क्षुधरोग विनाशन, हित नैवेद्य चढ़ाय दिया।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।। ५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन से ही आलोक ज्ञान का, जिनके मन को भाया है।
उनके चरणों में मोह नाश, हेतू यह दीप जलाया है।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब राजसुखों में पली चन्दना, चन्दन गंध सहित काया।
उनकी पूजन में धूप चढ़ाने, से होगी सुरभित काया।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल के भारों से झुके वृक्ष, माता के चरण नमन करते।
अविनश्वर फल की इच्छा से, फल थाल चरण में हम रखते।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे बालब्रह्मचारिणी मात, जलफल सब तुम्हें समर्पित है।
''चन्दनामती'' का भक्ति अर्घ्य, चन्दनासती को अर्पित है।।
श्री वीरप्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवशरणस्य प्रमुख गणिनी श्रीचन्दना आर्यिका मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके पावन पग धोने को, नदियों की धार तरसती हैं।
जिनके पग से संस्पर्शित जल, की बूँदें सदा महकती हैं।।
जिनकी महिमा में देवों ने, गंधोदक वर्षा कर डाली।
उन मात चन्दना के पद में, मैंने भी जलधारा डाली।।

शांतये शांतिधारा।

फूलों पर पग रखने वाली ने, कांटों का पथ अपनाया।
इसलिए फूल पुष्पांजलि बनकर, चरणों में चढ़ने आया।।
जिनकी महिमा में देवों ने भी, पुष्प बहुत बरसाए हैं।
उन मात चन्दना के पद में, मैंने भी पुष्प चढ़ाए हैं।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज–कभी राम बनके........

पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनी माता जयवन्त होवें चन्दना।।
राजा चेटक की थीं सात कन्या।
सबसे छोटी थी उनमें से चंदना।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।१।।

हरा विद्याधर ने चन्दना को छल से।
लेकिन छूटी अपने ब्रह्मचर्य बल से।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।२।।

कौशाम्बी में घटी एक घटना।
जहाँ बेड़ियों में बांधी गयी चन्दना।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।३।।

पहुँचे कौशाम्बी में महावीर जब।
टूटी बेड़ियां दिया आहार तब।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।४।।

छोड़ा चंदना ने घर परिवार भी।
दीक्षा आर्यिका की ले बनी गणिनी।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।५।।

जब तक धरती पे है वीर शासन।
गणिनी चन्दना का नाम हो प्रकाशन।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।६।।

गणिनी ज्ञानमती माता ने बताया।
उसी इतिहास को दरशाया।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।७।।

देना आशीष ''चन्दनामती'' को।
गुणों का अंश कुछ देना मुझको।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।८।।

दोहा

महासती गणिनी प्रमुख, मात चन्दना नाम।
अर्घ्य समर्पण कर उन्हें, नितप्रति करूँ प्रणाम।

ॐ ह्रीं महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

शंभु छंद

गणिनी माता श्री ज्ञानमती की, शिष्या इक चन्दनामती।
महावीर के छब्बिस सौवें जन्मोत्सव पर पूजन रचना की।।
जो सती चन्दना गणिनी माता, की पूजा मन से करते।
वे महावीर के अनुयायी, चन्दन सम काया को लभते।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

(तर्ज—माई रे माई..........)

मुनिसुव्रत की जन्मभूमि से, गूंज उठा इक नारा।
पार्श्वनाथ का महामहोत्सव करे, जगत यह सारा।।
बोलो वाराणसी की जय, बोलो पार्श्वनाथ की जय।।टेक.।।

पारस प्रभु तेइसवें तीर्थंकर हैं, जैनधरम के।
वाराणसि में जन्मे, राजा अश्वसेन के घर में।।
वामा माता धन्य हो गईं, इन्द्र करें जयकारा।
पार्श्वनाथ का महामहोत्सव, करे जगत यह सारा।।बोलो...।।१।।

गर्भ जन्म तप तीन कल्याणक, वाराणसि में मनाये।
इन्द्र ज्ञानकल्याण मनाने, अहिच्छत्र में आये।।
श्री सम्मेदशिखर पर्वत से, प्राप्त किया शिवद्वारा।
पार्श्वनाथ का महामहोत्सव, करे जगत यह सारा।।बोलो...।।२।।

पारस प्रभु की तृतिय सहस्राब्दी का उत्सव आया।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता ने सबको समझाया।।
ऋषभ-वीर के बाद करो अब, तृतिय महोत्सव प्यारा।
पार्श्वनाथ का महामहोत्सव, करे जगत यह सारा।।बोलो...।।३।।

उत्सव और महोत्सव कर, जिन धर्म की शान बढ़ाओ।
इस माध्यम से सभी जैन मिल, एक मंच पर आओ।।
तभी ''चन्दनामती'' धर्म का, ध्वज लहराए प्यारा।
पार्श्वनाथ का महामहोत्सव, करे जगत यह सारा।।
बोलो वाराणसी की जय, बोलो पार्श्वनाथ की जय।
बोलो अहिच्छत्र की जय, श्री सम्मेदशिखर की जय।।४।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-मेरे देश की धरती...........

राजगृह नगरी विपुलाचल पर्वत से धन्य हुई है,
राजगृह नगरी...... ।।टेक.।।
पच्चिस सौ साठ बरस पहले, महावीर जहाँ पर आये थे।
उन समवसरण में इन्द्रभूति, गौतम परिकर सह आये थे।।
बन गये शिष्य प्रभु के, तब उनकी दिव्यध्वनी खिरी है।।
राजगृह नगरी.।।१।।

श्रावण वदि एकम का वह दिन, महावीर का शासन दिवस कहा।
जब वीर की दिव्यध्वनि सुनकर, गौतम गणधर ने ज्ञान लहा।।
इस दिन ही द्वादश अंग रूप, जिनवाणी रची गई है।।
राजगृह नगरी.।।२।।

है आज भी पावन समवसरण, विपुलाचल पर्वत पर निर्मित।
महावीर के चरणों से राजगृह, नगरी का कण-कण वंदित।।
इसलिए ज्ञानमती माताजी की, दृष्टि प्रसन्न हुई है।।
राजगृह नगरी.।।३।।

प्रभु मुनिसुव्रत की जन्मभूमि, इतिहास यहाँ का पुराना है।
''चंदनामती'' उस पुण्यभूमि को,विकसित खूब कराना है।।
कुण्डलपुर के निकटस्थ तीर्थ की,गरिमा वृद्धि हुई है।।
राजगृह नगरी.।।४।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-तेरी नगरी से दूर................।।

माता त्रिशला के लाल, कुण्डलपुर के युवराज,
महावीर स्वामी।।टेक.।।
जन्मे वीरा जब तुम, तो इन्द्रों ने भी आकर, रतन बरसाया,
रतन बरसाया-जन्म उत्सव मनाया।
राजा सिद्धारथ ने, खुशी में झूम करके, भण्डार खुलवाया,
भण्डार खुलवाया, सबको दान बंटवाया।
दिन वह बना इतिहास, अहिंसा का बजा नाद,
महावीर स्वामी।।१।।
तुमने वीरा हमको तो, दे दी सारी निधियाँ, हम सोते ही रहे।
हम सोते ही रहे, निधियां खोते ही रहे।
तेरी जन्मनगरी, न विकसित किया हमने, बस रोते ही रहे,
रोते ही रहे, सब कुछ खोते ही रहे।।
किया कर्तव्य न याद, करते रहे केवल बात,
महावीर स्वामी।।२।।
अब तो घड़ियाँ आईं, जब ज्ञानमती माता की, प्रेरणा मिली
प्रेरणा मिली, उनकी प्रेरणा मिली।
तेरी जन्मनगरी, उस कुण्डलपुरी नगरी में, ज्योति इक जली,
ज्योति इक जली, नई ज्योति इक जली।
''चन्दनामती'' यह बात, सचमुच बनी इतिहास,
महावीर स्वामी।।३।।

राजगृही तीर्थ की आरती

रचयित्री-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

आरति करो रे,
श्री राजगृही पावन तीरथ की, आरति करो रे।
इस तीरथ पर तीर्थंकर श्री,
मुनिसुव्रत ने जन्म लिया।
अपनी त्याग तपस्या से,
इसके हर कण को धन्य किया।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
माता सोमा के प्रिय नन्दन की, आरति करो रे।।१।।

गर्भ - जन्म - तप - ज्ञान चार,
कल्याणक हुए इसी भू पर।
पितु सुमित्र ने जीवन धन्य,
किया तीर्थंकर सुत पाकर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
इन्द्रों से पूजित नगरी की, आरति करो रे।।२।।

समवसरण महावीर प्रभू का,
आया विपुलाचल नग पर।
छ्यासठ दिन के बाद प्रथम,
देशना खिरी इस ही गिरि पर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री इन्द्रभूति गौतम गणधर की आरति करो रे।।३।।

समवसरण का दर्शन करके,
चला भक्ति से मेंढक एक।
गज के पैरों से दबकर वह,
हुआ उसी क्षण स्वर्ग में देव।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चमत्कारमय इस भूमी की, आरति करो रे।।४।।

इस ही पावन तीरथ पर,
गणिनी माँ ज्ञानमती जी ने।
मुनिसुव्रत की खड्गासन,
प्रतिमा स्थापित कर दी है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
''सारिका'' सभी मिल भक्ती से, आरति करो रे।।५।।

मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती

रचयित्री–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज-जिया बेकरार है..........

मुनिसुव्रत भगवान हैं, सर्वगुणों की खान हैं।
आरति करते जो भविजन, क्रम से पाते निर्वाण हैं।।
मुनिसुव्रतनाथ भगवान हैं।।टेक.।।

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, नील प्रभा के धारी हैं। नील......
हे हरिवंश शिरोमणि प्रभुवर, छवी तेरी मनहारी है। छवी......
राजगृही शुभ धाम है, जन्में श्री भगवान हैं।।आरति........।।१।।

पितु सुमित्र जी पिता तुम्हारे, सोमादेवी माता हैं।।सोमादेवी.....
श्रावण वदी द्वितीया तिथि को, गर्भ बसे जगत्राता हैं।।गर्भ......
इन्द्र करें गुणगान हैं, हुआ गर्भकल्याण है।।आरति.......।।२।।

शुभ वैशाख वदी बारस तिथि, जब जिनवर ने जन्म लिया।जब....
अरु वैशाख वदी दशमी तिथि, दीक्षा ले वन गमन किया।।दीक्षा.....
प्रभु महिमा सुखदान है, जाने सकल जहान है।।आरति......।।३।।

थी वैशाख वदी नवमी, केवल रवि किरणें प्रकट हुईं। केवल.......
फाल्गुन कृष्ण सुबारस, गिरि सम्मेदशिखर से मुक्ति मिली।।सम्मेदशिखर....
तीरथराज महान है, प्रभु को हुआ निर्वाण है।।आरति......।।४।।

प्रभू आपकी आरति करके, केवल इक अभिलाष करूँ।।केवल.....
मुक्तिवधू मिल जावे ''इन्दू'', फेर न भव भव भ्रमण करूँ।। फेर......
करते जगकल्याण हैं, पावन पूज्य महान हैं।।आरति.......।।५।।

आरती श्री महावीर स्वामी की

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज – तन डोले......

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की, मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।टेक.।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिषला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रतन बरसाए ।। प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।1।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभु लीना ।
चैत्र सुदी तेरस के दिन वहाँ, इन्द्र महोत्सव कीना ।। प्रभू जी.।।
थे नाथवंश के, भूषण तुम, बस एकमात्र अवतार थे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।2।।

यौवन में दीक्षा धारण कर, राज–पाट सब त्यागा ।
मगषिर असित मनोहर दषमी, मोह अंधेरा भागा ।। प्रभू जी. ।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।3।।

शुक्ल दषमि वैषाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था ।। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।4।।

पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेष किया था ।। प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।5।।

वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो ।। प्रभू जी.।।
अतिषयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।6।।

गणधरवलय मंत्र

(2561 वर्ष पूर्व (वर्तमान वीर निर्वाण संवत् 2530 से पूर्व) राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर स्वामी के समवसरण में श्री गौतम स्वामी के मुख से निकले हुए मंत्र)

(१) णमो जिणाणं
(२) णमो ओहिजिणाणं
(३) णमो परमोहिजिणाणं
(४) णमो सव्वोहिजिणाणं
(५) णमो अणंतोहिजिणाणं
(६) णमो कोट्ठबुद्धीणं
(७) णमो बीजबुद्धीणं
(८) णमो पादाणुसारीणं
(९) णमो संभिण्णसोदाराणं
(१०) णमो सयंबुद्धाणं
(११) णमो पत्तेयबुद्धाणं
(१२) णमो बोहियबुद्धाणं
(१३) णमो उजुमदीणं
(१४) णमो विउलमदीणं
(१५) णमो दसपुव्वीणं
(१६) णमो चउदसपुव्वीणं
(१७) णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
(१८) णमो विउव्व-इड्ढि-पत्ताणं
(१९) णमो विज्जाहराणं
(२०) णमो चारणाणं
(२१) णमो पण्णसमणाणं
(२२) णमो आगास-गामीणं
(२३) णमो आसीविसाणं
(२४) णमो दिट्ठिविसाणं
(२५) णमो उग्गतवाणं
(२६) णमो दित्ततवाणं
(२७) णमो तत्ततवाणं
(२८) णमो महातवाणं
(२९) णमो घोरतवाणं
(३०) णमो घोरगुणाणं
(३१) णमो घोर-परक्कमाणं
(३२) णमो घोरगुण-बंभयारीणं
(३३) णमो आमोसहिपत्ताणं
(३४) णमो खेल्लोसहिपत्ताणं
(३५) णमो जल्लोसहिपत्ताणं
(३६) णमो विप्पोसहिपत्ताणं
(३७) णमो सव्वोसहिपत्ताणं
(३८) णमो मणबलीणं
(३९) णमो वचिबलीणं
(४०) णमो कायबलीणं
(४१) णमो खीरसवीणं
(४२) णमो सप्पिसवीणं
(४३) णमो महुरसवीणं
(४४) णमो अमियसवीणं
(४५) णमो अक्खीण-महाणसाणं
(४६) णमो वड्ढमाणाणं
(४७) णमो सिद्धायदणाणं
(४८) णमो भयवदो महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्धरिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियच्छे, तस्संतियं वेणइयं पउंजे।
काएण वाचा मणसावि णिच्चं, सक्कारए तं सिर-पंचमेण।।१।।

गणधरवलय मंत्र

(हिन्दी पद्यानुवादकर्त्री–गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

(शंभु छंद)

मैं नमूँ जिनों को जो अर्हन् अवधीजिन मुनि को नमूँ नमूँ।
परमावधिजिन को नमूँ तथा, सर्वावधि जिन को नमूँ नमूँ।।
मैं नमूँ अनंतावधिजिन को, अरु कोष्ठबुद्धियुत साधु नमूँ।
मैं नमूँ बीजबुद्धीयुतमुनि, पादानुसारियुत साधु नमूँ।।१।।

संभिन्न श्रोतृयुत साधु नमूँ, मैं स्वयंबुद्ध मुनिराज नमूँ।
प्रत्येक बुद्ध ऋषिराज नमूँ, पुनि बोधित बुद्ध मुनीश नमूँ।।
ऋजुमतिमनपर्यय साधु नमूँ, मैं विपुलमतीयुत साधु नमूँ।
मैं नमूं संभिन्न सुदशपूर्वी, चौदशपूर्वी मुनिराज नमूँ।।२।।

अष्टांगमहानिमित्तकुशली, नमूँ नमूँ विक्रियाऋद्धि प्राप्त।
विद्याधरऋषि को नमूँ नमूँ मैं, संयत चारणऋद्धि प्राप्त।।
मैं प्रज्ञाश्रमणमुनीश नमूँ, आकाशगामि मुनिराज नमूं।
आशीविषयुत ऋषिराज नमूँ, दृष्टीविषयुतमुनिराज नमूँ।।३।।

मैं उग्रतपस्वी नमूँ दीप्ततपि, नमूँ तप्ततपसाधु नमूँ।
मैं नमूँ महातपधारी को, अरु घोरतपोयुत साधु नमूँ।।
मैं नमूँ घोरगुणयुत साधू, मैं घोरपराक्रम साधु नमूँ।
मैं नमूँ घोरगुणब्रह्मचारि, आमौषधिप्राप्त मुनीश नमूँ।।४।।

क्ष्वेलौषधिप्राप्त मुनीश नमूँ, जल्लौषधि प्राप्त मुनीश नमूँ।
विप्रुष औषधियुत साधु नमूँ, सर्वौषधिप्राप्त मुनीश नमूँ।।
मैं नमूँ मनोबलि मुनिवर को, मैं वचनबली ऋद्धीश नमूँ।
मैं कायबली मुनिनाथ नमूँ, मैं क्षीरस्रावी साधु नमूँ।।५।।
मैं घृतस्रावी मुनिराज नमूँ, मैं मधुरस्रावी साधु नमूँ।
मैं अमृतस्रावी साधु नमूँ, अक्षीणमहानस साधु नमूँ।।
मैं वर्धमान ऋद्धीश नमूँ, मैं सिद्धायतन समस्त नमूँ।
मैं भगवत् महति महावीर, श्री वर्द्धमान बुद्धर्षि नमूँ।।६।।

जिनके निकट मैं धर्म पथ को प्राप्त किया हूँ।
उनके निकट ही विनयवृत्ति धार रहा हूँ।।
नित काय से वचन से और मन से उन्हीं को।
पंचांग नमस्कार करूँ भक्तिभाव सों।।७।।

चैत्यभक्ति

(श्री गौतम गणधर स्वामी द्वारा विरचित)

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृंभिता-
वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ।
कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणो।
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः।।१।।

ऐसे ही इस चैत्यभक्ति में कुल ३५ श्लोक हैं, जो कि मुनिचर्या आदि पुस्तक से देखें। इसका हिन्दी पद्यानुवाद गणिनी ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित है—

चैत्यभक्ति

(हिन्दी पद्यानुवाद—चौबोल छंद)

जय हे भगवन्! चरण कमल तव, कनक कमल पर करें विहार।
इन्द्र मुकुट की कांति प्रभा से, चुंबित शोभें अति सुखकार।।
जात विरोधी कलुषमना क्रुध, मान सहित जन्तू गण भी।
ऐसे तव पद का आश्रय ले, प्रेम भाव को धरें सभी।।१।।

जय हो श्रेयस्कर धर्मामृत, वृद्धिंगत महिमाशाली।
कुगति कुपथ से प्राणीगण को, निकालकर दे सुख भारी।।
नय को मुख्य गौण करने से, बहुत भेद युत सुखदाता।
ऐसे जिनवचनामृतमय, हे धर्म! करो जग से रक्षा।।२।।
जय हो जैनी वाणी जग में, सप्तभंगमय गंगा है।
व्यय उत्पाद ध्रौव्ययुत द्रव्यों, के स्वभाव को प्रगट करे।।
अनुपम शिवसुख द्वार खोलती, अव्यय सुख को देती है।
विघ्न रहित अरु कर्म धूलि से, रहित मोक्ष को देती है।।३।।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधुगण सुर वंदित।
त्रिभुवन वंदित पंच परम गुरु, नमोऽस्तु तुमको मम संतत।।
मोहारि के घातक द्वयरज, आवरणों से रहित जिनेश।
विघ्न-रहस विरहित पूजा के, योग्य अर्हत् को नमूँ हमेश।।४।।

क्षमादि उत्तम गुणगण साधक, सकल लोक हित हेतु महान्।
शुभ शिवधाम धरे ले जाकर, जिनवर धर्म नमूँ सुख खान।।
मिथ्याज्ञान तमोवृत जग में, ज्योतिर्मय अनुपम भास्कर।
अंगपूर्वमय विजयशील, जिनवचन नमूँ मैं शिर नत कर।।५।।

भवनवासि व्यन्तर ज्योतिष, वैमानिक में नर लोक में ये।
जिनभवनों की त्रिभुवन वंदित, जिनप्रतिमा को वंदूँ मैं।।

भुवनत्रय में जितने जिनगृह, भव विरहित तीर्थंकर के।
भवाग्नि शांति हेतु नमूँ मैं, त्रिभुवनपति से अर्चित ये।।६।।

इस विध प्रणुत पंचपरमेष्ठी, श्री जिनधर्म जिनागम को।
विमल चैत्य चैत्यालय वंदूँ, बुधजन इष्ट बोधि मम दो।।
द्युतिकर जिनगृह में अकृत्रिम, कृत्रिम अप्रमेय द्युतिमान।
नर सुर पूजित भुवनत्रय के, सब जिनबिंब नमूँ गुणखान।।७।।

द्युति मंडल भासुर तनु शोभित, जिनवर प्रतिमा अप्रतिम है।
जग में वैभव हेतु उन्हें, वंदूँ अंजलिकर शिर नत मैं।।
आयुध विक्रिय भूषा विरहित, जिनगृह में प्रतिमा प्राकृत।
कांति से अनुपम हैं कल्मष, शांति हेतु मैं नमूँ सतत।।८।।

परम शांति से कषाय मुक्ति, को कहती मनहर अभिरूप।
भव के अंतक जिनकी प्रतिमा, प्रणमूँ मन विशुद्धि के हेतु।।
दुष्कृत पथ रोधक मम सिद्ध, भक्ति से हुआ पुण्य जो भी।
भव-भव में जिनधर्म हि में, दृढ़ भक्ति रहे फल मिले यही।।९।।

सब पदार्थवित् दर्श ज्ञान, सम्पत् युत अर्हंत की प्रतिमा।
यथा बुद्धि मनशुद्धि हेतु, गुण कीर्तन करूँ अतुल महिमा।।
श्रीमद् भवनवासि के गृह में, भासुर जिनमूर्ति स्वयमेव।
परम सिद्धगति करें हमारी, वंदूँ उन्हें करूँ नित सेव।।१०।।

इस जग में जितनी प्रतिमा हैं, कृत्रिम अकृत्रिम सबको।
मैं वंदूँ शिव वैभव हेतू, सब जिन चैत्य जिनालय को।।
व्यंतर के विमान में जिनगृह, उनमें अकृत्रिम प्रतिमा।
संख्यातीत कही हैं वंदूँ, दोष नाश के हेतु सदा।।११।।

ज्योतिष देवों के विमान में, अद्भुत संपत् युत जिनगेह।
स्वयंभुवा प्रतिमा भी अगणित, उन्हें नमूँ निज वैभव हेतु।।
सुरपति के नत मुकुटमणी-प्रभ से अभिषेक हुआ जिनका।
वैमानिक सुर सेवित प्रतिमा, सिद्धि हेतु मैं नमूँ सदा।।१२।।

इस विध स्तुति पथातीत, अन्तर बाहिर श्रीयुत अर्हन्।
चैत्यों के संकीर्तन से, मम सर्वास्रव का हो रोधन।।
अर्हद्देव महानद उत्तम, तीर्थ अलौकिक हैं जग में।
त्रिभुवन भविजन तीर्थस्थान से, पापों का क्षालन करते।।१३।।

लोकालोक सुतत्व प्रकाशक, दिव्यज्ञान जल नित बहता।
शील रु सद्व्रत विशाल निर्मल, दो तट से शोभित दिखता।।
शुक्लध्यानमय राजहंस, स्थिर राजत हैं इस नद में।
मंद्रघोष स्वाध्याय विविधगुण, समिति गुप्ति बालू चमके।।१४।।

क्षमादि हैं आवर्त सहस्रों, सर्वदयामय कुसुम खिले।
लता शोभतीं दुस्सह परिषह, भंग तरंगित हैं लहरें।।
रहित कषाय फेन से राग-द्वेष आदि शैवाल रहित।
रहित मोह कीचड़ से मरणादिक जलचर मकरादि रहित।।१५।।

ऋषि प्रधान के मधुर स्तव हों, विविध पक्षी के शब्द सदृश।
विविध साधुगण तट हैं आस्रव, रोध निर्जरा जल निःसृत।।
गणधर चक्री इन्द्र आदि जो, भव्य प्रवर बहु पुरुष प्रधान।
कलिमल कलुष दूर करने हित, भक्ति से यहाँ किया स्नान।।१६।।

इस विध श्री अर्हंत महाप्रभु, महातीर्थ गणधर कहते।
भविजन पाप मैल क्षालन हित, इसमें अवगाहन करते।।
अति पावन यह तीर्थ अन्य से, अजेय अनुपम है गंभीर।
मैं स्नान हेतु उतरा हूँ, मम दुष्कृत मल करिये दूर।।१७।।

क्रोधाग्नि को जीत लिया, नहिं नेत्र कमल लालिमा प्रभो।
नहिं विकार उद्रेक अतः प्रभु, दृष्टि कटाक्ष रहित तुम हो।।
मद विषाद से रहित अतः, स्मित मुख सदा रहे भगवन्।
कहता है यह मंदहास्य, तव अंतःकरण शुद्धि पूरण।।१८।।

रागोद्रेक सहित होने से, बिन आभूषण शोभित हो।
प्रकृति रूप निर्दोष तुम्हारा, प्रभु निर्वस्त्र मनोहर हो।।

हिंसा हिंस्य भाव विरहित से, आयुध रहित सुनिर्भय हो।
विविध वेदना के क्षय से, बिन भोजन तृप्त सदा प्रभु हो।।१९।।

वृद्धि रहित नख केश प्रभो! रजमल स्पर्श न हो तन को।
विकसित कमल सुचंदन सम है, दिव्य सुगंधित देह विभो।।
रवि शशि वज्र दिव्य लक्षण से, शोभित तव शुभरूप महान।
कोटि सूर्य से अधिक चमक फिर भी दर्शक को प्रिय सुखदान।।२०।।
मोहराग से दूषित हितपथ, द्वेषीजन के सुन उपदेश।
कलुषमना जन हुए जगत में, शुचि होते वे तुमको देख।।
अतिशय युत तव मुख दर्शक, जन को अपने सन्मुख दिखता।
शरद् विमल शशि मंडल सम तव, आस्य चन्द्र है उदित हुआ।।२१।।

अमरेश्वर के नमस्कार से, मुकुट मणिप्रभ किरणों से।
चुम्बित चरण सरोरुह भगवन्! तव शुभ रूप मनोहर है।।
अन्य देव गुरु तीर्थ उपासक, सकल भुवन यह अन्ध समान।
उन सबको तव रूप पवित्र, करे अरु नेत्र करे अमलान।।२२।।

अंचलिका

भगवन् चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोष।
उनकी आलोचन करने को, इच्छुक हूँ धर मन संतोष।।
अधो मध्य अरु ऊर्ध्वलोक में, अकृत्रिम कृत्रिम जिनचैत्य।
जितने भी हैं त्रिभुवन के, चउविध सुर करें भक्ति से सेव।।१।।

भवनवासि व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक सुर परिवार सहित।
दिव्य गंध दिव चूर्णवास से, दिव्य न्हवन करते नितप्रति।।
अर्चें पूजें वंदन करते, नमस्कार वे करें सतत।
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं, पूजूँ वन्दूँ नमूँ सतत।।२।।

दु:खों का क्षय कर्मों का क्षय, होवे बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिन गुण संपत् होवे।।३।।

वीरभक्तिः

(श्री गौतम गणधर स्वामी द्वारा विरचित)

यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्द्रव्याणि तेषां गुणान्।
पर्यायानपि भूतभाविभवतः सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत् प्रतिक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्यते
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः।।१।।

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य वीरं तपो
वीरे श्री-द्युति-कान्ति-कीर्ति-धृतयो हे वीर! भद्रं त्वयि।।२।।

ये वीरपादौ प्रणमन्ति नित्यं
ध्यानस्थिताः संयमयोगयुक्ताः।
ते वीतशोका हि भवन्ति लोके
संसारदुर्गं विषमं तरंति।।३।।

व्रतसमुदयमूलः संयमस्कन्धबन्धो
यमनियमपयोभिर्वर्धितः शीलशाखः।
समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रवालो
गुणकुसुमसुगन्धिः सत्तपश्चित्रपत्रः।।४।।

शिवसुखफलदायी यो दयाछाययोद्यः (द्घः)
शुभजनपथिकानां खेदनोदे समर्थः।
दुरितरविजतापं प्रापयन्नन्तभावं
स भवविभवहान्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्षः।।५।।

चारित्रं सर्वजिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंचभेदं पंचमचारित्रलाभाय।।६।।

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म! मां पालय।।७।।

धम्मो मंगलमुद्दिट्ठं (मुक्किट्ठं) अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो।।८।।

वीरभक्ति

(हिन्दी पद्यानुवादकर्त्री—गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

(चौबोल छंद)

जो विधिवत् सब लोक चराचर, द्रव्यों को उनके गुण को।
भूत भविष्यत् वर्तमान, पर्यायों को भी नित सबको।।
युगपत समय-समय प्रति जाने, अतः हुए सर्वज्ञ प्रथित।
उन सर्वज्ञ जिनेश्वर महति, वीर प्रभू को नमूँ सतत।।१।।

वीर सभी सुर असुर इन्द्र से, पूज्य वीर को बुध सेवें।
निज कर्मों को हता वीर ने, नमः वीर प्रभु को मुद से।।
अतुल प्रवर्ता तीर्थ वीर से, घोर वीर प्रभु का तप है।
वीर में श्री द्युति कांति कीर्ति, धृति हैं हे वीर! भद्र तुम में।।२।।

जो नित वीर प्रभु के चरणों, में प्रणमन करते रुचि से।
संयम योग समाधीयुत हो, ध्यान लीन होते मुद से।।
इस जग में वे शोक रहित हो, जाते हैं निश्चित भगवन्।
यह संसार दुर्ग विषमाटवि, इसको पार करें तत्क्षण।।३।।

व्रत समुदाय मूल है जिसका, संयममय स्कंध महान्।
यम अरु नियम नीर से सिंचित, बढ़ी सुशाखाशील प्रधान।।
समिति कली से भरित गुप्तिमय, कोंपल से सुन्दर तरु है।
गुण कुसुमों से सुरभित सत्तप, चित्रमयी पत्तों युत है।।४।।

शिवसुख फलदायी यह तरुवर, दयामयी छाया से युत।
शुभजन पथिक जनों के खेद, दूर करने में समरथ नित।।
दुरित सूर्य के हुए ताप का, अन्त करे यह श्रेष्ठ महान्।
वर चारित्र वृक्ष कल्पद्रुम, करे हमारे भव की हान।।५।।

सभी जिनेश्वर ने भवदुःखहर, चारित को पाला रुचि से।
सब शिष्यों को भी उपदेशा, विधिवत् सम्यक् चारित ये।।
पाँच भेद युत सम्यक् चारित, को प्रणमूँ मैं भक्ती से।
पंचम यथाख्यात चारित की, प्राप्ति हेतु वंदूँ मुद से।।६।।

धर्म सर्वसुख खानि हितंकर, बुधजन करें धर्म संचय।
शिवसुखप्राप्त धर्म से होता, उसी धर्म के लिए नमन।।
धर्म से अन्य मित्र नहिं जग में, दया धर्म का मूल कहा।
मन को धरूँ धर्म में नित, हे धर्म! करो मेरी रक्षा।।७।।

धर्म महा मंगलमय है यह, कहा वीर प्रभु ने जग में।
प्रमुख अहिंसा संयम तपमय, धर्म सदा उत्तम सबमें।।
जिसके मन में सदा धर्म है, सुरगण भी उसको प्रणमें।
मैं भी नमूँ धर्म को संतत, धर्म बसो मेरे मन में।।८।।

आज से (ईसवी सन् २००४) २५६१ वर्ष पूर्व राजगृही नगरी के विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के समवसरण में गौतम गणधर स्वामी ने अन्तर्मुहूर्त में द्वादशांग की रचना कर दी थी किन्तु वह द्वादशांग की रचना लिपिबद्ध नहीं हो सकती है। आज उन गौतम स्वामी की पाँच रचनाएँ उपलब्ध हैं। टीकाकारों ने बड़े गौरव से जैन साहित्य में उनको लिया है। गणधरवलय मंत्र, चैत्यभक्ति, वीरभक्ति, दैवसिक-रात्रिक प्रतिक्रमण एवं पाक्षिक प्रतिक्रमण के रूप में वे पाँचों रचनाएं जानी जाती हैं, दिगम्बर जैन चतुर्विध संघ परम्परा में इन पाठों को यथासमय पढ़ने की परम्परा है।

राजगृही तीर्थ की आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-माई रे माई.................

राजगृही जी तीर्थक्षेत्र की, आरति को हम आए।
आरति के माध्यम से, निज आतम की ज्योति जगाएं।।बोलो जय..।।टेक.।।

इसी धरा पर तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जी जन्में,
माता सोमा के महलों में, रत्न करोड़ों बरसे।
हुए चार कल्याणक जहाँ पर.............
हुए चार कल्याण जहाँ पर, उस तीरथ को ध्याएँ।।आरति.।।१।।

समवसरण महावीर प्रभू का, विपुलाचल पर आया,
छ्यासठ दिन तक खिरी न वाणी, इन्द्र बहुत अकुलाया।।
इन्द्रभूति ने ज्यों दीक्षा ली.............
इन्द्रभूति ने ज्यों दीक्षा ली, दिव्यध्वनि प्रगटाए।।आरति.।।२।।

राजा श्रेणिक और चेलना, रानी हुईं विख्याता।
जैनधर्म का ध्वज फहराया, फैली थी यशगाथा।।
राजा श्रेणिक वीर प्रभू के.........
राजा श्रेणिक वीर प्रभू के, श्रोता प्रमुख कहाए।।आरति.।।३।।

समवसरण के दर्शन हेतू, चला भक्तिवश मेढ़क।
गज के पैरों तले दबा, और देव बना था तत्क्षण।।
नाना इतिहासों की जननी..........
नाना इतिहासों की जननी, भू को शीश झुकाएं।।आरति.।।४।।

इस नगरी में पंच पहाड़ी, जन-जन का मन हरतीं।
कई मुनी गए मोक्ष जहाँ से, उसकी गाथा कहतीं।।

जैन संस्कृति की दिग्दर्शक.........
जैन संस्कृति की दिग्दर्शक, हैं इतिहास कथाएं।।आरति.।।५।।

नगरी के गिरिव्रज, वसुमति कई नाम शास्त्र में माने।
जुड़े कई इतिहास यहाँ से, तीर्थ सुपावन जानें।।
जम्बूस्वामी हुए विरागी.........
जम्बूस्वामी हुए विरागी, केवलिजिन को ध्याएं।।आरति.।।६।।

गणिनी माता ज्ञानमती के, चरण पड़े तीरथ पर।
मुनिसुव्रत प्रभु जन्मभूमि की, कीरत फैली भू पर।।
तीर्थ ''चन्दना'' परम पूज्य.............
तीर्थ ''चन्दना'' परमपूज्य, आत्मा को तीर्थ बनाए।।आरति.।।७।।